## ।। श्री गणेश वन्दना ।।

(तर्ज : कन्हैया ले चल परली पार...)

**गजानन्द किरपा करियो जी -२,**
**बेगा आओ विघ्न मिटाओ, बाधा हरियो जी ।। टेर ।।**

पहलो न्यूतो थे स्वीकारो, आंगणिये में आन पधारो,
म्हारा अटक्या काज संवारो, रिद्धि-सिद्धि संग ऊँचे आसण -२
आकर चढ़ियो जी ।। १ ।।

मूसे चढ़कर बेगा आओ, लाभ शुभ ने सागे ल्याओ,
आके किर्तन सफल बणाओ, पावन चरण कमल थे म्हारे -२,
घर में धरियो जी ।। २ ।।

थारे सागे लिक्षमी आवे, अन्न-धन्न सुं कोठा भर जावे,
'हर्ष' भगत थारी किरपा चावे, सुख सम्पत्ति सुं भण्डारा थे -२,
म्हारा भरियो जी ।। ३ ।।

## ।। श्री गणेश वन्दना ।।

(तर्ज : किस्मत वालों को मिलता है श्याम तेरा दरबार...)

**सबसुं पहल्याँ म्हे, गणपत ने सिमरां बारम्बार,**
**आओ सभा में देवा, रिद्धि सिद्ध भरतार ।। टेर ।।**

मूसे चढ़कर बेगा आ जाओ, टाबरियां को मान बढ़ा जाओ,
थारे आयां शोभा बढ़ जासी, म्हारे मन की बगिया खिल जासी,
थां पर ही सगलो देवा, है दारमदार ।। १ ।।

किर्तन की सारी तैयारी है, बस थारे आणे की बारी है,
भगतां की विनति पर गौर करो, बेगा आओ मतना देर करो,
पहल्याँ ही होवे देवा, थारी दरकार ।। २ ।।

म्हारे मन में आस घणेरी है, आणे में इब क्याँकि देरी है,
''हर्ष'' घणी मनवार करे थारी, आके आस पुराओ थे म्हारी,
भगतां रा भरद्यो देवा, आकर भण्डार ।। ३ ।।

## ।। श्री गुरु वन्दना ।।

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर ...)

**गुरुवर तूने श्याम मिलन का, रस्ता दिया दिखाय,**
**नमन गुरुदेव हमारा, दिखाया मार्ग प्यारा ।। टेर ।।**

भटका हुआ था देवा, मैं था अकेला,
बिल्कुल ना जान पाया, सावरें की लीला,
हाथ पकड़ कर इक भटके को, रस्ता दिया सुझाय ।। १ ।।

कैसे मैं ध्याऊं इनको, कैसे मनाऊं,
क्या-क्या करुं मैं इनको, कैसे रिझाऊं,
पाठ तुम्ही ने श्याम सजन का, मुझको दिया पढ़ाय ।। २ ।।

श्याम विरह मे मैं था, रोता बिलखता,
तुम जो ना होते तो मैं, किसको पकड़ता,
'हर्ष' आपने इक रोते को, पल में दिया हँसाय ।। ३ ।।

## ।। श्री पित्तरजी वन्दना ।।

(तर्ज : तेरे होठों के दो फूल...)

**म्हारे पितरां की बड़ी सकलाई,**
**थे तो करो म्हारी पग-पग पे सुणाई,**
**म्हारी विपदा में आडा आओ जी - आओ जी ।। टेर ।।**

जद-जद म्हासूं गलती होवे, थे झट म्हाने ज्ञान कराओ,
म्हारे सिर पे हाथ फिरा कर, म्हारी भूलां ने देवा भुलाओ,
म्हाने थारो ही आधार, देवा थे हो खेवनहार,
म्हारी नैया थे पार लगाओ जी - लगाओ जी ।। १ ।।

शुभ की घड़ियां में थारी, म्हे पहल्याँ पहरानी निकालाँ,
थारो छूतो निकाल्यां पाछे, म्हे भोजन की थाली सम्भाला,
म्हारो सारो परिवार, देवा थारो कर्जदार,
थे भटक्या न राह दिखाओ जी - दिखाओ जी ।। २ ।।

थे मायत म्हे टाबर हाँ थारा, म्हापे किरपा सदा यूँही होवे,
कह्वे 'हर्ष' सदा म्हारे सिर पर, थारो हाथ दया को होवे,
सारो थापें दारमदार, देवा करियो थे विचार,
म्हांपे किरपा की बरखा कराओ जी - कराओ जी ।। ३ ।।

## ।। श्री हनुमत वन्दना ।

(तर्ज : रहा गर्दिशों में हरदम ...)

**कर देख तेरी कश्ति, मेरे राम के हवाले,**
**मझधार में प्रभुजी, बन जायेगें रुखाले ।। टेर ।।**

थक जाये खेते खेते, जब नाव तू अकेला,
उस वक्त बनके माझी, मेरे राम ही सम्भाले ।। १ ।।

जीवन की मुश्किलों में, कोई रास्ता ना सूझे,
हमराज अपना बंदे, मेरे राम को बनाले ।। २ ।।

टकरायेगें जो आकर, तूफान के थपेड़े,
गहरे भंवर से नईया, मेरे राम ही निकाले ।। ३ ।।

पतवार सौंप इनको, भव पार जा लगेगा,
साँसों में 'हर्ष' अपनी, मेरे राम को बसाले ।। ४ ।।

## ।। श्री हनुमत वन्दना ।।

(तर्ज : संसार है इक नदिया...)

**क्या भूल हुई बाबा, जो तुमने बिसारा है,**
**हनुमान दया दिखला, मुझे तेरा सहारा है ।। टेर ।।**

अवगुण का पुतला हूँ, हर कदम पे बहका हूँ,
कष्टों की अग्नि में, मैं पल-पल दहका हूँ,
ये भूल गया था मैं, मेरा तुमसे गुजारा है ।। १ ।।

बिल्कुल ही अनाड़ी हूँ, भीतर का ज्ञान नहीं,
अच्छा या बुरा क्या है, ये भी पहचान नहीं,
मुझे आन सम्भालो प्रभु, गर्दिश में सितारा है ।। २ ।।

जग ने तो छोड़ दिया, पर तुम थामे रखना,
मैं दास तुम्हारा हूँ, हे नाथ दया करना,
इस 'हर्ष' को क्या परवाह, जब साथ तुम्हारा है ।। ३ ।।

## ।। श्री हनुमत वन्दना ।।

(तर्ज : जिन्दगी की ना टूटे...)

**भोर होने की आई घड़ी, देर कर दी क्युं इतनी बड़ी,**
**राम बिलखे है हनुमत तेरा, देखो असुँवन की लागी झड़ी ।।**

पी रहा हूँ विरह का जहर, जल्दी आ जाओ गिरिवर धरण,
रात का है ये अंतिम पहर, उगने आई है पहली किरण,
मौत दरवाजे पे है खड़ी, देर कर दी क्युं इतनी बड़ी ।। १ ।।

कौन ढ़ांढ़स बंधाये मुझे, देखो भाई धरा पर गिरा,
मेरे आसुँ पुकारे तुझे, लाज रखले तू मेरी जरा,
कैसी आफत ये आन पड़ी, देर कर दी क्युं इतनी बड़ी ।। २ ।।

मैंने जब भी भरोसा किया, 'हर्ष' उतरा तू हरदम खरा,
आज फिर ऐसा क्या हो गया, काहे मुर्छित हो लक्ष्मण पड़ा,
लेके आ जाओ बूंटी जड़ी, देर कर दी क्युं इतनी बड़ी ।। ३ ।।

## ।। हनुमान वन्दना ।।

(तर्ज : होठों से छू लो तुम...)

**ये राम का सेवक है, ये राम दिवाना है,**
**प्रभुराम की महिमा को, हनुमान ने जाना है ।। टेर ।।**

हर रोम में राम बसे, हर साँस से राम भजे,
हर हाल में बजरंगी, श्री राम का नाम जपे,
श्री राम के भजनों का, रसिया ये पुराना है ।। १ ।।

भाई से बढ़के इन्हें, प्रभु राम ने माना है,
बड़े सुन्दर शब्दों में, तुलसी ने बखाना है,
श्री राम के चरणों में, इनका तो ठिकाना है ।। २ ।।

दो शब्द अनूठे हैं, हनुमान जपे हर पल,
ये महामन्त्र हमको, देता है आत्मबल,
श्री राम नाम सुमिरन, ऐ 'हर्ष' सुहाना है ।। ३ ।।

## ।। श्री हनुमत वन्दना ।।

(तर्ज : साथिया नहीं जाना...)

**राम के प्यारे कहदे तू कब आयेगा,**
**सारे प्रेमी आये तू कब आयेगा ।। टेर ।।**

दर्शन को तेरे, बाबा साँझ सबेरे,
देखो बरसे ये मेरे, नैना बावरे,
ज्योति जलाके, तेरा ध्यान लगाके,
तुझे सिर को झुकाके, ध्याऊँ आज रे,
छोड़ो युँ तरसाना तू कब आयेगा ।। १ ।।

भक्ति अपार तेरी, शक्ति अपार तुझे,
पूजे संसार, सारा जान ले,
दर्शन की आस लेके, आया तेरा दास बैठा,
चरणों के पास, बाबा मान ले,
प्रेमी को सता ना तू कब आयेगा ।। २ ।।

बाबा तेरी याद में, आती है रूलाई,
'हर्ष' मेरी कलाई, आके थाम ले,
आया बड़ी आस ले, सेवक ये तुम्हारा,
तेरे दर्शन का मारा, आजा सामने,
छुप के बैठा है क्युं तू कब आयेगा ।। ३ ।।

## ।। श्री हनुमत वन्दना ।।

(तर्ज : ऐ मेरे दिले नादां...)

**श्री राम की मस्ती में, हर पल रहने वाले,**
**है शत् शत् नमन तुझे, ओ सालासर वाले ।। टेर ।।**

साँसो में राम बसे, सुमिरन में राम बसे,
हर रोम में बजरंगी, प्रभु राम ही राम बसे,
रघुवर की चौखट पे, बैठे बन रखवाले ।। १ ।।

सीने को चीर दिया, शंका ही मिटा डाले,
प्रभु राम का नाम लिया, लंका को जला डाले,
श्री राम नाम अंकित, कुटिया को बचा डाले ।। २ ।।

तू राम के गुण गाये, तुझे राम भजन भाये,
जहाँ राम की चर्चा हो, वहाँ 'हर्ष' तुझे पाये,
प्रभु राम की महिमा सुन, हो जाते मतवाले ।। ३ ।।

## ।। श्री हनुमत वन्दना ।।

(तर्ज : मेरे श्याम सा निराला...)

**हनुमान सा निराला कोई और नहीं है,**
**रघुनंदन का रखवाला कोई और नहीं है ।। टेर ।।**

संकट मोचन नाम तुम्हारा, ''भक्तन के रखवारे''-२,
मेहन्दीपुर में आप विराजो, ''हरते कष्ट हमारे''-२,
कष्टों को हरने वाला कोई और नहीं है ।। १ ।।

सेवा में रघुवर की तूने, ''लगा देईं जिन्दगानी''-२,
बल बुद्धि में वीर तुम्हारा, ''दूजा ना कोई सानी''-२,
बलियों में भूप निराला कोई और नहीं है ।। २ ।।

''हर्ष'' कहे ये आठों सिद्धि, ''नव निधियों के दाता''-२,
भक्ति और शक्ति का दाता, ''पार ना कोई पाता'' -२,
श्री राम नाम मतवाला कोई और नहीं है ।। ३ ।।

## ।। श्री हनुमत वन्दना ।।

(तर्ज : गोरी है कलाईयां...)

**हे हनुमन्ता, हरो अब मेरी चिन्ता,**
**किरपा दिखादे दीनानाथ रे ।। टेर ।।**

कितनी कठिन है राहें, कितना झमेला,
टूट चुका हूँ बाबा, मैं हूँ अकेला,
तुझको ध्याऊँ, तेरा ही ध्यान लगाऊँ,
पकड़ो दयालु मेरा हाथ रे ।। १ ।।

सब कुछ तुझे ही मैंने, अपना है माना,
नादां समझ के बाबा, मुझको निभाना,
मैं हूँ अनाड़ी, चलेगी कैसे गाड़ी,
छोड़ ना देना मेरा साथ रे ।। २ ।।

तेरे सिवा ना कोई, दूजा है संगी,
'हर्ष' की हरले बाबा, हाथ की तंगी,
दया दिखादे, दास को सबल बनादे,
मुझको भी दे दे ये सौगात रे ।। ३ ।।

## (शिवरात्री पर्व) शिव विवाह का भजन

(तर्ज : आज मेरे यार की शादी है ...)

**आज भोले नाथ की शादी है,**
**हाथों से शिव ने गोरां की मांग सजा दी है ।। टेर ।।**

बनी दुल्हन भवानी, वो भोले की पटरानी,
सुरंगी मेहन्दी राची, चुनरिया सिर पे साजी, हो ऽऽऽऽऽ
वर माला मैया को बाबा ने पहना दी है ।। १ ।।

गले विषधर लटकाये, लो शिव दूल्हा बन आये,
बजे है बैण्ड बाजे, मगन हो नन्दी नाचे, हो ऽऽऽऽऽ
ठुमक ठुमक नाचे ठुमको की झड़ी लगा दी है ।। २ ।।

हुई मैना मतवाली, लिये हाथों में थाली,
हो शिव दामाद जिसका, भला कहना क्या उसका, हो ऽऽऽऽऽऽ
त्रिलोकी अब बने जवाँई चान्दी चान्दी है ।। ३ ।।

सजी बारात आई, ये शिव की रात आई,
देवगण सारे हरषे, गगन से फूल बरसे, हो ऽऽऽऽऽऽ
'हर्ष' हिमाचल ने स्वागत में पलक बिछादी है ।। ४ ।।

## ।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : इक तू जो मिला...)

**किस जुबां से करूँ मैं तेरा शुक्रिया,**
**ओ भोले दानी तूने मुझे इतना दिया ।। टेर ।।**

ये दौलत ये शोहरत मोहब्बत मिली,
दयालु तुम्हारी इबादत मिली,
कोई कर ना सके तूने जितना किया ।। १ ।।

ये जीवन मेरा है दुर्गंध भरा,
सुगंधित इसे आज करदे जरा,
मैंने तेरा दिया बस खाया पिया ।। २ ।।

हो चरणों में अब तो ठिकाना प्रभु,
हूँ नादां मुझे ना भुलाना प्रभु,
'हर्ष' युँही रहे बाबा तेरी दया ।। ३ ।।

## ।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : बहुत प्यार करते हैं ...)

**बड़े भोले भाले, दयावान हो,**
**अलमस्त मेरे, भगवान हो ।। टेर ।।**

न कपड़े हैं तन पे, न आसन सुहाना,
धतूरे का भोजन, जमीं पर ठिकाना,
तीन लोक के फिर भी, निगहबान हो ।। १ ।।

दूध की दुनिया, बहाती है धारा,
सजाती है तेरा, शृंगार प्यारा,
जल भी चढ़ाये तो, मेहरबान हो ।। २ ।।

शरण जो भी आये, गले से लगाते,
'हर्ष' हमेशा बाबा, करुणा दिखाते,
भगतों की बगिया के, बागवान हो ।। ३ ।।

## ।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : हनुमान को खुश करना ...)

**भोले बाबा का वंदन, आसान होता है,**
**इन्हें जल चढ़ाने से, कल्याण होता है ।। टेर ।।**

ये आक धतूरा ही, खुश होकर खाता है,
इन्हें छप्पन भोग भला, कैसे फिर भाता है,
इक बेल पत्र से इनका, सम्मान होता है ।। १ ।।

ये प्रेम का प्यासा है, और भाव का भूखा है,
श्रद्धा सबकी देखे, न रुखा सूखा है,
आडम्बर करने वाला, नादान होता है ।। २ ।।

महलों में ठिकाना ना, जंगल में बसेरा है,
चाहे गली हो या नुक्कड़, हर जगह पे डेरा है,
हर भक्त का 'हर्ष' हमेशा, इन्हें ध्यान होता है ।। ३ ।।

## ।। श्री शिव वन्दना ।।

(तर्ज : बस यही अपराध ...)

**हर घड़ी तेरी जटा से धार बहती है,**
**भोले तुझको दुनिया पालनहार कहती है ।**
**(जै हो महेश - जै हो महेश - जै हो महेश, जै जै ।। टेर ।।**

ब्रह्मा-विष्णु, देव सभी गण, तेरे गुण गाये,
तेरे जैसा दूसरा ना, सबको बतलाये,
देव-गणों की भीड़ तेरे द्वार रहती है ।। १ ।।

तू ही करता, तू ही भरता, तू ही संघारी,
महिमा तेरी है अनोखी, भोले भण्डारी,
तेरी किरपा भगतों पे, हर बार रहती है ।। २ ।।

फक्कड़ बनके, रहते हो क्यूं, इतना बतला दो,
रूप असली आपका, भगतों को दिखला दो,
चाहत इतनी 'हर्ष' की अपार रहती है ।। ३ ।।

## ।। श्री शक्ति वन्दना ।।

(तर्ज : पीलो)

**चूनड़ तो ओढ़ म्हारी दादी पीढ़े पर बैठ्या जी,**
**तो अइयाँ की चून्दड़ी माँ कुण तो उढ़ाई जी,**
**म्हारे मन भायी जी ।। टेर ।।**

लाल सुरंगी मेहन्दी हाथां में राची जी,
तो अइयाँ की मेहन्दी माँ कुण तो रचाई जी,
म्हारे मन भायी जी ।। १ ।।

हीरो तो चमके दादी नथली में थारे जी,
तो अइयाँ की नथली माँ कुण तो पिराई जी,
म्हारे मन भायी जी ।। २ ।।

बनड़ी सी बणकर दादी आसण-बिराजे जी,
तो अइयाँ की सोवणी माँ कुण तो सजाई जी,
म्हारे मन भायी जी ।। ३ ।।

म्हे तो बड़भागी 'हर्ष' दादी पधार्‌या जी,
तो अइयाँ की मन में थारे पहल्याँ क्युं ना आई जी,
म्हारे मन भायी जी ।। ४ ।।

## ।। श्री शक्ति वन्दना ।।

(तर्ज : तेरे मस्त-मस्त दो नैन...)

**नूर टपकता दादी, मुखड़े से तेरे,**
**नजरें ना हटती मैया, चेहरे से तेरे -२,**
**माँ तेरी चुनरिया लाल, हुआ देखके मालामाल,**
**हुआ देखके मालामाल, माँ तेरी चुनरिया लाल ।। टेर ।।**

लाल सुरंगी चुनड़ी, शीश पे दादी, सोहे तेरे सोहे, सोहे तेरे,
सुन्दर सी झाँकी, मन को भवानी, मोहे मेरे मोहे, मोहे मेरे,
चुनड़ी पे दादी तेरी, जाऊँ मैं वारी,
''दिल में बसी है मेरे, झाँकी ये प्यारी''-२ ।। १ ।।

प्यारा सिंगार ये, हाथों से अपने, किसने सजाया तेरा, किसने सजाया,
ममता मयी रूप ने, मैया तुम्हारे, मनवा लुभाया मेरा, मनवा लुभाया,
नीन्दों में देखता हूँ, सपने मैं तेरे,
''मूरत बसी है दादी, आँखों में मेरे''-२ ।। २ ।।

चुनड़ी सुहाग की, होती है मैया, अमर निशानी दादी, अमर निशानी,
मुझको भी आज माँ, प्यारी सी चुनड़ी, तुमको उढ़ानी दादी, तुमको उढ़ानी,
आओ भवानी मेरा, मान बढ़ाने,
''हर्ष' भगत आया चुनड़ी उढ़ाने'' -२ ।। ३ ।।

## ।। श्री शक्ति वन्दना ।।

(तर्ज : ग्यारस चानण की आई...)

**नोमी मंगसिर की आई, परणीजे लाडो बाई,**
**तनधन पधार्‌या म्हारे आँगणे, ओ भगतो ...।। टेर ।।**

तोरण मारण के तांई, ''कवंरा पधार्‌या ओ-२''
गंगा माँ लेवे बलाई, ''आरतो उतार्‌या ओ-२''
साथिड़ा घूमर घाले, गिन्नी का थाल उछाले,
नाचे बाराती म्हारे बारणे, ओ भगतो ...।। १ ।।

वरमाला पाछे बाई, ''फेरां में बैठी ओ -२''
तनधन पहराई बाई ने, ''नेग अगूंठी ओ-२''
जोशी जी मन्तर गावे, दोन्यां सुं वचन भरावे,
माँ बापू बैठ्‌या निरखे सामणे, ओ भगतो ...।। २ ।।

छप्पन भान्ति का व्यंजन, ''आज बणाया ओ-२''
होसी इब गोठ सजन की, ''थाल सजाया ओ-२''
तनधन जी जीमण आवे, नेवगण को नेग चुकावे,
सीठणा सखियाँ लागी घालणे, ओ भगतो ...।। ३ ।।

सिरगूंथी होयां पाछे, ''होसी पहरानी ओ-२''
आई बिदा की घड़ियाँ, ''सखियाँ सब जाणी ओ-२''
''हर्ष'' नाराणी बाई, हो जासी आज पराई,
आँखड़ल्यां बरसे याही कारणे, ओ भगतो ...।। ४ ।।

अरे खाटूवाले तू दर्शन दिखा ।
मेरे दिल तो तुझपे हुआ है फिदा ।
नहीं रखना खुद से तुम मुझको जुदा ।
दिवाने की सुनले तू इतनी सदा ।।

## ।। श्री शक्ति वन्दना ।।

(तर्ज : आने से उसके आये बहार...)

**सिर पे माँ सोहे चूनरिया लाल,**
**हाथों की मेहन्दी लगती कमाल,**
**जादूगारी लागे है, दादी झांकी तेरी,**
**प्यारी-प्यारी लागे है, दादी झांकी तेरी ।। टेर ।।**

लाल रंग चूड़ा, माँ के हाथों की शोभा बढ़ाये,
पांव में पैजनिया, दादी होले से घुघुंरु बजाये,
बिदियां का, कहना क्या, मनुहारी लागे है,
दादी झाँकी तेरी... ।। १ ।।

बन संवर के देखो, आज कीर्तन में मैया पधारी,
माँ की किरपा देखो, आज उमड़ी है दुनिया लो सारी,
गूँज रहे, जयकारे, मतवारी लागे है,
दादी झाँकी तेरी... ।। २ ।।

हो रहा है वंदन, माँ के भजनों में खोये है सारे,
'हर्ष' माँ के बेटे, देखो बैठे हैं सुधबुध बिसारे,
वश में ना, आज जिया, कामणगारी लागे है,
दादी झाँकी तेरी... ।। ३ ।।

## ।। श्री शक्ति वन्दना ।।

(तर्ज : धमाल)

**हो sss दादी दरसण दे दे, पग मैं तेरा कोन्या छोड़ुं ऐ**
**कोन्या छोड़ुं, कोन्या छोड़ुं, कोन्या छोड़ुं ऐ ।। टेर ।।**

दर दर भटक्यो पाछे मैया थारी शरणां आयो ऐ,
थारे नाम की चूनड़ दादी मैं भी ओढ़ुं ऐ ।। १ ।।

गुणा भाग सगला कर देख्या बात समझ मे आई ऐ,
साँची प्रीत का तार भवानी थां संग जोड़ुं ऐ ।। २ ।।

मुण्डो देख के टीको काडे मतलब की या दुनिया ऐ,
भूल हुई चौखट सुं इब ना मुण्डो मोड़ुं ऐ ।। ३ ।।

छोड़ छाड़ सब शरणां आयो टाबर ने अपना ले ऐ,
मोह माया को 'हर्ष' भवानी फंदो तोड़ुं ऐ ।। ४ ।।

## ।। गौमाता ।।

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर...)

**अमृत जैसा दूध पिलाये, गऊ हमारी माँ,**
**नमन हे पालनहारी, मेरी गौमाता प्यारी,**
**तैंतिस कोटि देव विराजे, तेरे अन्दर माँ,**
**नमन हे पालनहारी, मेरी गौमाता प्यारी ।। टेर ।।**

युग-युग से हमको तूने, दूध पिलाया,
इसी लिये माँ का दरजा, तुमने है पाया,
इक माता ने जनम दिया पर, पाला तुमने माँ,
नमन हे पालनहारी... ।। १ ।।

जीते जी हमको माँ तू, पुष्ट बनाती,
मरने के बाद भव से, पार लगाती,
वैतरणी से मानव को तू, पार कराती माँ,
नमन हे पालनहारी... ।। २ ।।

द्वापर में कृष्ण की तू, दुलारी बनी थी,
गौपाष्टमी को तेरी, पूजा हुई थी,
'हर्ष' तभी से पूजी जाती, इस दिन तू गौ माँ,
नमन हे पालनहारी... ।। ३ ।।

## ।। गौमाता ।।

(तर्ज : क्या मिलिये ऐसे ... )

**चारा खाती गाय को बन्दे, कभी हटाना ना चाहिये,**
**हरी घास जब मिलती हो तो, फूस खिलाना ना चाहिये ।।**

बच्चों के खातिर हर माता, दूध की धार बहाती है,
पहली धारा से वो अपने, पूत को दूध पिलाती है,
लालच के वश पीता बछड़ा, कभी छुड़ाना ना चाहिये ।। १ ।।

कितना दूध वो देगी ये, अपनी-अपनी मर्यादा है,
किसी के थन से थोड़ा निकले, किसी के थन से ज्यादा है,
ज्यादा दूध के लालच में उसे, सूई लगाना ना चाहिये ।। २ ।।

गोमाता की सेवा करिये, 'हर्ष' यही बतलाता है,
सच्चा प्राणी निर्बल गऊ को, गोशाला पहुँचाता है,
असहाय को बूचड़खाने, कभी भिजाना ना चाहिये ।। ३ ।।

## ।। गौमाता ।।

(तर्ज : मोहब्बत की झूठी ... )

**जवानी में जिसको दूध पिलाया ...**

**बुढ़ापे में उसने मुझे ठुकराया ... ।। टेर ।।**

जब तक बहाई, दूध की धारा,
तब तक मिला मुझको, प्यार ढ़ेर सारा,
निर्बल समझ के मुझे क्यूं भुलाया ।। १ ।।

जब तक था दमखम, मिनख मैंने पाले,
बुढ़ापे में कर डाला, खाक के हवाले,
नेकी के बदले में मैंने क्या पाया ।। २ ।।

अरे कहने वाले, मुझको गोमाता,
बेटे का फर्ज फिर तू, क्यूं ना निभाता,
'हर्ष' कहे मोहे क्यूं बिसराया ।। ३ ।।

## ।। गौमाता ।।

(तर्ज : छुप गया कोई रे...)

**मुझको दिया अपनों ने, घर से निकाल रे,**
**आया बुढ़ापा हुई, मैं बदहाल रे ।। टेर ।।**

सूख चुके हैं थन, दूध ना आये रे,
मतलब बिना अब चारा, कौन खिलाये रे,
निर्बल की कौन करे है, जग में सम्भाल रे ।। १ ।।

भूखी भटकती हूँ, सहने ना पाऊँ रे,
जहाँ जो भी पाऊँ वहीं, मुँह मैं चलाऊँ रे,
चिंता करे क्युं कोई, किसे है मलाल रे ।। २ ।।

''हर्ष'' ना जानुं अब, क्या होगा मेरा रे,
चिन्ता की बदली ने, मुझको है घेरा रे,
गौशाला भेजी जाऊँ, होऊँ या हलाल रे ।। ३ ।।

## ।। निर्गुण ।।

(तर्ज : मिलती है जिन्दगी में...)

**आदत दया की डाल लो, हो जायेगा भजन,**
**हारे का हाथ थाम लो, हो जायेगा भजन ।। टेर ।।**

जिसने तुम्हारे सामने, फैला दिये दो हाथ,
याचक की मंशा मान लो, हो जायेगा भजन ।। १ ।।

गम का सताया जो तेरी, चौखट पे आ गया,
दुखिया का दर्द बांट लो, हो जायेगा भजन ।। २ ।।

अच्छे बुरे की तो समझ, ईश्वर ने दी हमे,
करना है क्या ये जान लो, हो जायेगा भजन ।। ३ ।।

मानव धर्म से 'हर्ष' क्यूं, तुझको परहेज है,
दूरी जरा ये पाट लो, हो जायेगा भजन ।। ४ ।।

## ।। निर्गुण ।।

(तर्ज : लग जायेगी लगन धीरे-धीरे...)

**ढ़ल जायेगी उमर धीरे-धीरे,**
**झुक जायेगी कमर धीरे-धीरे ।। टेर ।।**

दो दिन का यौवन, पीछे बुढ़ापा,
मंद पड़ जाये नजर धीरे-धीरे ।। १ ।।

जीवन तेरा इक, बर्फ का ढ़ेला,
पिघलेगा आठों पहर धीरे-धीरे ।। २ ।।

तृष्णा कभी तेरी, होगी ना पूरी,
होगा खतम ये सफर धीरे-धीरे ।। ३ ।।

'हर्ष' यहाँ कुछ, करले तू ऐसा,
परलोक जाये सुधर धीरे-धीरे ।। ४ ।।

## ।। निर्गुण ।।

(तर्ज : क्या मिलिये ऐसे लोगों से ...)

**भंग हुई जब-जब मर्यादा, तब-तब जग में जंग हुई,**
**शर्मसार सब रिश्ते हो गये, मानवता बदरंग हुई ।। टेर ।।**

जूअे में जब धर्मराज ने, पत्नि दाव लगाई थी,
दुर्योधन ने निज भाभी को, नंगी जांघ दिखाई थी,
भरी सभा में सबके आगे, पांचाली अधनंग हुई ।। १ ।।

लक्ष्मण रेखा तोड़ के सीता, ने जब कदम बढ़ाया था,
भिक्षुक बनके रावण आया, माता को हर लाया था,
आंधी बन हनुमान पधारे, लंका में हुड़दंग हुई ।। २ ।।

बाली ने सुग्रीव के सारे, राज पाट का हरण किया,
हद हुई जब छोटे भाई, की पत्नि का वरण किया,
जेठ के जोर जुलम के आगे, रूमा बड़ी अपंग हुई ।। ३ ।।

अश्वमेघ के घोड़े को जब, श्री राम ने छोड़ दिया,
'हर्ष' कहे उसे लव और कुश ने, बीच राह में रोक लिया,
पिता को पुत्रों ने ललकारा, दशा बड़ी बेढ़ंग हुई ।। ४ ।।

## ।। निर्गुण ।।

(मुझे इश्क है तुम्ही से...)

**ये जान ले किसी का, दिल ना कभी दुखाना,**
**कहीं देख ना सताये, पीछे तुझे जमाना ।। टेर ।।**

काँटा किसी के प्यारे, जो पैर में चुभोये,
पल भर तो वो हंसेगा, फिर जिन्दगी में रोए,
मुस्कां ना दे सके तो, आँसु कभी ना देना ।। १ ।।

जब दूसरे के घर में, कर देगा तू अंधेरा,
रोशन रहेगा कैसे, इन्सान घर भी तेरा,
जलता हुआ किसी का, तू दीप ना बुझाना ।। २ ।।

होठों से जो हँसी को, जब छीन कर रुलाता,
हर वक्त हर घड़ी वो, आँखे भरी ही पाता,
हँसते को एक क्षण भी, ऐ 'हर्ष' ना रुलाना ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : अगर बेबफा तुझको पहचान जाते ...)

**अगर साँवरे मुझपे, दया जो ना होती,**
**तुम्हारी कसम, है हिफाजत ना होती,**
**कलाई अगर तूने, पकड़ी न होती तो,**
**मेरी जिन्दगानी, सलामत न होती ।। टेर ।।**

जिसे दोस्त समझा, उसी ने रुलाया,
मुसीबत में बाबा, ''तूही काम आया''-२,
जो खुल जाती पहले ही, आँखे मेरी तो,
जमाने से हरगिज मोहब्बत ना होती ।। १ ।।

हुई भूल तुमको, क्युं पहले ना जाना,
अंधेरो में ऐसे ना, ''भटकता दिवाना''-२,
दया की तुम्हारी ये, आदत ना होती तो,
कन्हैया तुम्हारी इबादत ना होती ।। २ ।।

मेरी है तमन्ना, सदा साथ पाऊँ,
कभी ना दयालु, ''तुम्हें भूल जाऊँ''-२,
पराया मुझे तुम, समझते अगर तो,
कहे 'हर्ष' इतनी इनायत ना होती ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : ओ नन्हे से फरिश्ते...)

**आजा रे श्याम आजा,**
**खड़े लाज के लुटेरे, लुटने से तू बचा जा ।**
**आजा आजा श्याम बाबा -२ ।। टेर ।।**

इक लाज ही तो बाबा, गहना है बस हमारा,
गर वो ही लुट गया फिर, क्या काम है तुम्हारा,
अबला समझ के मुझको, अब चीर तू बढ़ा जा ।। १ ।।

कहते है ग्रंथ सारे, दीनों का तू है साथी,
मुझ दीन पे बता क्युं, तुझको दया न आती,
कलयुग का हूँ सुदामा, अपने गले लगा जा ।। २ ।।

अच्छे करम ना मेरे, तकलीफ पा रहा हूँ,
अब हार कर दयालु, तुमको बुला रहा हूँ,
गणिका के जैसी किरपा, इस 'हर्ष' पे दिखा जा ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : आजा मेरी बरबाद मोहब्बत...)

**आजा पड़ी मझधार नईया दे दे किनारा,**
**मजबूर होके आज मैंने तुझको पुकारा ।। टेर ।।**

दम खम था जब तक हाथ में ''पतवार चलाई''-२,
अब और ना चल पाये ''आके पकड़ो कलाई''-२,
है और मेरा श्याम तुम बिन कौन सहारा ।। १ ।।

अपने भगत के वास्ते ''तू हरदम आया है''-२,
दुखड़ों से अपने दास को ''तुमने बचाया है''-२,
है रात सूनी काली चारों ओर अंधेरा ।। २ ।।

मुझको यकीं तू डूबने से ''पहले आयेगा''-२,
तूफान तेरे होते क्या ''मेरा कर पायेगा''-२,
अब थामलो इस 'हर्ष' ने लो हाथ पसारा ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : स्वर्ग से सुन्दर...)

**आज तेरे सिंगार में बाबा गजरों की भरमार,**
**सांवरे स्वागत तेरा...**
**सावन भादो की अम्बर से रिमझिम पड़े फुहार ।**
**सांवरे स्वागत तेरा... ।। टेर ।।**

आजा कन्हैया तुझको झूला झुलायें,
किर्तन में तुमको तेरे प्रेमी बुलाये,
डोर हिलाने को नटनागर सेवक हैं तैयार ।
सांवरे स्वागत तेरा... ।। १ ।।

आन पधारो कान्हा लाड लडायें,
चान्दी की चौकी पे हम तुमको बिठायें,
बड़ा ही प्यारा बड़ा ही सुन्दर आज लगा दरबार ।
सांवरे स्वागत तेरा... ।। २ ।।

वैसे तो जीवन सांसे तुम ही चलाते,
सावन में तेरी डोरी सेवक हिलाते,
'हर्ष' तुम्हारा बेसब्री से भगतों को इंतजार ।
सांवरे स्वागत तेरा... ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(कन्हैया ले चल परली पार...)

**आसरो बाबा थारो है -२,**
**थारे भरोसे बैठ्यो बाबा कोई ना म्हारो है ।। टेर ।।**

नैया मेरी भटक गई है,
थोड़ी-थोड़ी चटक गई है,
मझधारा में अटक गई है,
दारमदार दयालु इब तो थाँ पर सारो है ।। १ ।।

हाथ पकड़ले डूब ना जाऊँ,
रो-रो थाने आज बुलाऊँ,
मेरे मन की पीड़ सुणाऊँ,
थे ना सुणो तो डूब ही जास्युँ कोई ना चारो है ।। २ ।।

''हर्ष'' भगत की लाज बचाले,
चरणां मांही आज बिठाले,
टाबरिये ने गले लगाले,
शरणागत हूँ श्याम धणी इब तेरो सहारो है ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : ओ मनवा रे, मनवा जीवन है संग्राम...)

**ओ भगतों रे, भगतों, साचाँ एक ही नाम,**
**भजले श्याम-श्याम - श्याम - २ ।। टेर ।।**

देश ढुंढ़ारा, अनुपम प्यारा, ''बना है खाटू धाम''-२,
दीन दुःखी के, इस चौखट पे, ''बनते बिगड़े काम'' -२,
कोड़ी ना लागे, ना कोई दाम ।। १ ।।

इनके दर पे, सर को झुकाने, ''निश दिन आते लोग''-२,
यहाँ की माटी, मस्तक लगती, ''कट जाते हैं रोग''-२,
दरदी को मिलता आराम ।। २ ।।

कण कण में है, वास श्याम का, ''देख ले बन्दे आके''-२
हारे हुए को, जीत दिलाये, ''देख जरा आजमा के''-२
''हर्ष'' सुमिरले आठो याम ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(राग रचयिता : रजनीश शर्मा)

**दोहा : तेरी रजा में राजी हूँ, तेरे फैसले पर हैं यकीं ।**
**हर गम हर जुल्म मैं सह पाऊँ पर झुकुं ना कहीं ।।**
**सर झुके तो झुके तेरी ही इस चौखट पर ।**
**दूजे दर झुकने से पहले ये कट जाये सही ।।**
**तू दानी है दयावान है मेरे दोष मेरी खतायें माफ कर ।**
**मेरा हर गुनाह तू बख्श दे, और दिल अपना तू साफ कर ।।**

**इस कलयुग में तेरे जैसा देव नहीं कोई और,**
**तेरे हाथ में डोर सांवरे तेरे हाथ में डोर,**
**हारे का जो साथ निभाये देव नहीं कोई और,**
**तेरे हाथ में डोर सांवरे तेरे हाथ में डोर ।। टेर ।।**

श्याम तेरे दर क्या नहीं देखा, हमने बड़ा करिश्मा देखा,
रोते हुए को हँसते देखा, मरते हुए को जीते देखा,
जै जै श्याम का उठते देखा, हर कोने में शोर - २
तेरे हाथ में डोर सांवरे ...।। १ ।।

निर्बल का है एक सहारा, खाटू वाला श्याम हमारा,
वक्त पड़े ये दौड़ा आया, जिसने मन से नाम पुकारा,
तेरे दर को छोड़ हमारा, दूजा न कोई ठोर- २
तेरे हाथ में डोर सांवरे ...।।२ ।।

सेवा में तूने हमें लगाया, सारा हिन्दुस्तान घुमाया,
घर-घर अपना भजन कराया, मान और सम्मान दिलाया,
तेरे नाम का खूब बजाया, डंका चारों ओर -२,
तेरे हाथ में डोर सांवरे ...।।३ ।।

'हर्ष' तुम्हीं से लिखना सीखा, भाव भजन में भरना सीखा ,
तेरी दया से गाना सीखा, गाकर तुम्हें रिझाना सीखा,
अंग अंग थिरकाना सीखा, जैसे वन का मोर -२,
तेरे हाथ में डोर सांवरे...।।४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : जिसको तेरा भरोसा...)

**इक बार सांवरे से, तुम लौ लगा के देखो,**
**बरसेगी किरपा भारी, जरा आजमा के देखो ।। टेर ।।**

तुम दो कदम बढ़ोगे, ये सौ कदम बढ़ेगा,
ना हो खतम कभी फिर, ऐसा जुनूं चढ़ेगा,
हृदय में सांवरे की, मूरत बसा के देखो ।। १ ।।

जिनके दिलों में जलती, मेरे सांवरे की ज्योति,
लक्ष्मी स्वयं वहाँ पर, दिन रात पहरा देती,
मष्तक पे ज्योत भष्मि, अपने लगाके देखो ।। २ ।।

कलयुग का देवता है, क्या कुछ नहीं ये करता,
ब्रह्मा ने जो लिखा वो, पल भर में मेट सकता,
बस आस्था से अपने, सर को झुकाके देखो ।। ३ ।।

निर्बल को बल मिलेगा, इस देव का है वादा,
ऐ 'हर्ष' क्या तू सोचे, क्या है तेरा इरादा,
चरणों में सारी सुध-बुध, बंदे भुला के देखो ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : टूटी बाजुबन्द री लूम)

**उडे आकाशां निशान, शोभा कोन्या वरणी जाय,**
**आयो फागणियो रंगीलो चालो खाटू जी के माय,**
**चालो चालो रे साथिड़ो, हालो हालो रे साथीड़ो ।।**
**आयो फागणियो ... ।। टेर ।।**

गूंजे ढफली की तान, याही फागण की पिछाण,
मीठे भजनां को पान, करल्यो श्याम को गुणगान,
झाला दे दे करके भगतो थाने सांवरियो बुलाय ।।
चालो चालो रे... ।। १ ।।

चाली फागण की बयार, बाबा श्याम जी के द्वार,
लेके हो जाओ तैयार, टाबर टीकरां ने लार,
चालो श्याम धणी को झण्डो थारे हाथां में उठाय ।।
चालो चालो रे... ।। २ ।।

'हर्ष' मेलो भर्‌यो विशाल, नाही दूजी कोई मिसाल,
उडे रंग और गुलाल, माची होली की धमाल,
कोई रंग दीज्यो थे कान्हुड़े ने मंदरिये के माय ।।
चालो चालो रे... ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : ओ साथी रे तेरे बिना...)

**ओ कान्हा रे, तेरे बिना भी क्या जीना-२,**
**आँखें ये तरसे है-२, यादों में बरसे है,**
**सावन का जैसे महीना ।। टेर ।।**

तुमसे रोशन ये जग सारा, तुम बिन फीके चाँद सितारे,
तुम बिन सूनी मेरी आँखे, तुम बिन सूने सारे नजारे,
तुमसे ही जीवन है-२, तू दिल की धड़कन है,
तेरे बिना कुछ कहीं ना ।। १ ।।

हम भगतों को तूने ही प्यारे, प्रेम का ऐसा पाठ पढ़ाया,
जिसको देखें अपना लागे, कोई ना लागे हमको पराया,
तुझमे जो देखा है-२, हमने वो सीखा है,
प्रेम की पोथी पढ़ी ना ।। २ ।।

प्रेमी जन को ना तरसा रे, अब तो आजा ओ मतवारे,
सुलग रही है दर्शन की जो, ''हर्ष'' वो आके आग बुझा रे,
जल्दी से आ जाओ-२, दर्शन दिखला जाओ,
दूरी ये जाये सही ना ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मारा ठुमका बदल गई चाल ...)

**कभी देखा ना ऐसा श्रृंगार देख लो,**
**देखो देखो जी खाटू की बहार देख लो ।। टेर ।।**

संगेमरमर जड़ी, वो हवेली खड़ी,
जहाँ सज करके बैठे हैं श्याम धणी,
पहने बागा निराला, गल बैजन्ति माला,
जिनके हाथों में सोहे है मोरछड़ी,
जिसके झाड़े का तुम चमत्कार देखलो ।। १ ।।

प्यारा पेंचा सजा, माथे टीका लगा,
जो भी निरखे वही रह जाता ठगा,
भरा मेला विशाल, उड़े रंग गुलाल,
जहाँ देखो वंही लहराये ध्वजा,
श्याम भगतों की लम्बी कतार देखलो ।। २ ।।

सारी दुनिया चली, सांवरे की गली,
जाने वालों की फागुन में किस्मत खुली,
काम बनते वहां, कष्ट मिटते वहां,
'हर्ष' खिल जाती भगतों के मन की कली,
खाटू वाले का सच्चा दरबार देखलो ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : छुप गया कोई रे ...)

**करमां रो लेखो मेरो, घणां दुख पाऊँ,**
**मनड़े री पीड़ बाबा, कीने सुणाऊँ ।। टेर ।।**

साथिड़ा मुण्डो, मोड़ गया है,
मझधारां में बाबा, छोड़ गया है,
हिवड़े रा घाव कीनें, चीर दिखाऊँ ।। १ ।।

पलकां उघाड़ो, श्याम मिजाजी,
कैयां थे रुस्या म्हासुं, हो जाओ राजी,
छोड़ के थारो गेलो, मैं कठे जाऊँ ।। २ ।।

किस्मत या म्हारी, सोई पड़ी है,
''हर्ष'' मुसीबत म्हारे, स्यामी खड़ी है,
दुखड़ां री गिणती थाने, कैयां गिणाऊँ ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : ये मेरा दिवानापन है...)

**क्युं तेरा दिवाना तरसे, क्या हुआ मेरा कसूर,**
**सांवरे इतना बतादे, क्युं किया नजरों से दूर ।। टेर ।।**

मुझसे पहले भी हजारों, पापी क्युं तारे बता,
मैं समझ ना पा रहा हूँ, क्या हुई मेरी खता ।। १ ।।

माना मैं अधमी हूँ बाबा, पर शरण में हूँ तेरी,
शरणागत की पीड़ बोलो, हरने में कैसी देरी ।। २ ।।

गम ना हरते तो तुम्हारे, दर पे युं आते ना लोग,
मैं खड़ा चौखट पे सोचुं, कब मिटेगा मेरा रोग ।। ३ ।।

या पकड़ले हाथ मेरा, या तू कहदे मजबूरी,
'हर्ष' इक हारे हुए से, फिर भला क्युं ये दूरी ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : लम्बी जुदाई...)

**दोहा : लगे है दिल पे जखम बस गिन गिन के ।**
**कटेगें कैसे इस हाल में दिन ये ।।**

**करले सुनाई, मेरे श्याम कन्हाई, हाय कर ले सुनाई,**
**झर झर मेरे, नैन बहे मोहे, आती रुलाई -२,**
**अब ना समाई, क्युं आँख, चुराई हाय, करले सुनाई ।।**
**झर झर मेरे...।। टेर ।।**

चल नहीं पाऊँ मेरे, पावं थके हैं,
देखो जिया पे बाबा, घाव लगे हैं,
उसपे ये जग वाले, करते हंसाई, हाय...।। १ ।।

बिखर ना जाये कहीं, लाज के मोती,
सोचके रह रह मेरी, आँख ये रोती,
बंद है राहें कुछ ना, पड़ता सुझाई, हाय... ।। २ ।।

आना हो तो श्यामा, जल्दी से आओ,
'हर्ष' की आके बाबा, पीड़ मिटाओ,
सहने ना पाऊँ अब, तुमसे जुदाई, हाय... ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : तू इस तरह से मेरी ...)

**कहाँ पे श्याम तुझे ढूंढूँ, कुछ पता दे तू,**
**कहाँ ठिकाना तुम्हारा है,ये बता दे तू ।**
**कहाँ पे श्याम ....।। टेर ।।**

मैं चल पड़ा हूँ अकेला वीरान राहों में,
कहां मिलोगे इशारा जरा मुझे दे दे,
नहीं कोई है जहाँ में जो थाम ले बाहें,
तू ही सहारा है दीनों का, ये दिखा दे तू ।। १ ।।

हजारों गम है मेरे दिल पे बोझ भारी है,
सिवा तेरे ना कोई दर्द जो मेरा बांटे,
मैं तेरा अंश हूँ तू सामने जरा आ जा,
क्यूं तूने परदा लगाया है, आ हटा दे तू ।। २ ।।

नहीं पता है तुझे किस तरह पुकारुँ मैं,
हजारों नाम दयालु यहाँ तुम्हारे हैं,
मैं रख के सर को सुकुं से जहां पे सो पाऊँ,
तुम्हारी गोद में इस 'हर्ष' को समा ले तू ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : चिट्ठी ना कोई संदेश...)

**क्युं रूठ के बैठा श्याम,**
**क्या भूल हुई घनश्याम, मुझे क्युं भुला दिया,**
**नित जपुं तुम्हारा नाम, फिर भी तूने घनश्याम,**
**मुझे क्युं भुला दिया ।। टेर ।।**

जीवन में मेरे कैसा, तूफान ये आया है,
पहले तो हंसा कर श्याम, पीछे क्युं रुलाया है,
बरसे है मेरे दिन रैन, अब सूख गये है नैन,
मुझे क्युं भुला दिया ।। १ ।।

क्युं अपना बनाया था, सीने से लगाया था,
तेरे प्यार में मैंने तो, दुनिया को भुलाया था,
अब हो गई कौन-सी बात, क्युं छोड़ दिया है साथ,
मुझे क्युं भुला दिया ।। २ ।।

ऐ श्याम बिना तेरे, अच्छा है मर जाना,
ये घाव जुदाई का, अब 'हर्ष' तू भर जा ना,
प्रेमी हूँ तेरा मैं श्याम, मेरी आके कलाई थाम,
मुझे क्युं भुला दिया ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : दिल ही दिल में ले लिया मेहरबानी आपकी...)

**क्या कहुं क्या क्या किया है, श्याम ने मेरे लिये,**
**खुशियों से दामन भरा है, श्याम ने मेरे लिये ।। टेर ।।**

ऊँचा उठना चाहता था, पर सदा गिरता रहा,
हाथ थामे चल पड़ा है, सांवरा मेरे लिये ।। १ ।।

मैं भटकता था हमेशा, मंजिलों की चाह में,
बनके मंजिल आ गया है, सांवरा मेरे लिये ।। २ ।।

'हर्ष' अब कैसे करुँ में, सांवरे का शुक्रिया,
जहर को अमृत किया है, श्याम ने मेरे लिये ।। ३ ।।

**जुदा होके तुझसे न जी पाऊँगा ।**
**मेरे साँवरे मैं तो मर जाऊँगा ।**
**दया जो दिखाये तो तर जाऊँगा ।**
**तेरे बन्दगी से सँवर जाऊँगा ।।**

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : घूघरी)

**कान्हुड़ा थारो खीचड़लो बणाय,**
**थारी करमा ल्याई, चाव स्युँ जी म्हारा श्याम ।। टेर ।।**

देसी घी की प्याली देई ढुलाय,
थारे जीम्याँ पाछे, खायस्युँ जी म्हारा श्याम ।। १ ।।

बाबो म्हाने काम दियो भुलाय,
थाने आज जिमाऊँ, भाव स्युँ जी म्हारा श्याम ।। २ ।।

मतना बैठो आज भरोसे माय,
बाबो कद आसी, गांव स्युं जी म्हारा श्याम ।। ३ ।।

रुच-रुच जीमों पड़दो दियो लगाय,
पाछे थारा पगल्या, दाबस्युं जी म्हारा श्याम ।। ४ ।।

'हर्ष' श्याम म्हारे मन की देओ पुराय,
थारा जुग-जुग गुण मैं, गायस्युं जी म्हारा श्याम ।। ५ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : राग रचयिता - प्रवीण बेदी)

**कान्हा तेरी याद आई रे, नखराला साँवरिया,**
**देरी काहे लगाई रे, लगाई रे,**
**नखराला साँवरिया ।। टेर ।।**

आज हुई है क्यूं, मुझसे ये दूरी, अब तो मिलना बहुत जरूरी,
बिन देखे मैं रह नहीं पाऊँ, दिल में नाहीं समाई रे - समाई रे,
नखराला साँवरिया ।। १ ।।

तू ही बता दे रे, श्याम मिजाजी, कैसे करूं अब तुझको राजी,
तेरे विरह में ओ मतवारे, आती है मुझको रुलाई रे, रुलाई रे,
नखराला साँवरिया ।। २ ।।

फेर लई क्यूं, आज निगाहें, रो-रो पुकारे ''हर्ष'' की आहें,
अपनो की अपनो के अलावा, कौन करे है सुनाई रे - सुनाई रे,
नखराला साँवरिया ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : दुश्मन ना करे दोस्त ने वो ...)

**कोई ना करे श्याम ने जो काम किया है,**
**डूबते हुए का हाथ थाम लिया है ।। टेर ।।**

मझधार में जब छोड़ के ''अपने चले गये''-२
कश्ति किनारे पे लगा अहसान किया है ।। १ ।।

सपनो की डाली शाख से ''टूटी बिखर गईं''-२
सूखे चमन को सींच गुलिस्तान किया है ।। २ ।।

वो दुश्मनों से जा मिले ''कल तक जो दोस्त थे''-२
हस्ति को उनकी श्याम ने गुमनाम किया है ।। ३ ।।

सुख चैन मेरा छीन के ''सब ''हर्ष'' चल दिये''-२
हारे हुए को जीत का ईनाम दिया है ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : चले जा चले जा चले जा...)

**चले आ चले आ चले आ, यहाँ श्याम बसे ।। टेर ।।**

दीनों का नाथ है ये, हारे का साथ देता,
पतवार के बिना ही, भगतों की नाव खेता ।। १ ।।

द्वारे पे भी जो भी आये, स्वीकार सबको करता,
याचक हो चाहे कोई, इन्कार ना ये करता ।। २ ।।

निर्बल को थाम लेता, साथी इसे बनाले,
मझधार क्या करेगा, माझी इसे बनाले ।। ३ ।।

इतना बड़ा दयालु, कहलाता शीश दानी,
कलयुग में 'हर्ष' सारी, दुनिया बनी दिवानी ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(राग रचयिता : रजनीश शर्मा)

**छज्जे उपर काला कौआ बोल रहा था आज,**
**लीले की जब हिन-हिन करती आई जो आवाज,**
**जी कमाल, जी कमाल, जी कमाल हो गया,**
**लो आये मेरे श्याम जी कमाल हो गया,**
**इधर श्याम, उधर श्याम,**
**जिधर आँखें फेरूँ दिखे श्याम -३,**
**जी कमाल ... ।। टेर ।।**

देख रहा था रस्ता तेरा,
खुशियों से घर भर गया मेरा,
हो गया जी, हो गया जी,
आज मैं निहाल, जी कमाल ...।। १ ।।

**टप्पा : नच्चो - नच्चो जी जरा ठुमके लगाना,**
**घर आया मेरा कान्हा ।।**

मान प्रभु ने रखा मेरा,
आन लगाया घर में डेरा,
दे गया जी, दे गया जी,
प्रेम की मिसाल, जी कमाल ... ।। २ ।।

**टप्पा : बाबा की सब लेवो बलाई,**
**नजरें उतारो भाई ।।**

साँवरिये पे वारी जाऊँ,
श्याम चरण में शीश झुकाऊँ,
ले गया जी, ले गया दिल,
''हर्ष'' का निकाल, जी कमाल ...।। ३ ।।

**टप्पा : कान्हुड़ा तूने प्रीत निभाई,**
**करली प्रेम सगाई ।।**

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : छू लेने दे नाजुक होठों को...)

**छू लेने दे पावन चरणों को, अहसान तेरा ऐ श्याम रहे,**
**हारे का तू देव कुहाता है, ये नाम तेरा सरे आम रहे ।। टेर ।।**

प्यासा हूँ दयालु बरसों से, दरिया के किनारे हूँ मैं खड़ा,
जी भर के पिला दे प्रेम सुधा, फिर प्यास का ना कोई काम रहे ।।१ ।।

बिन तेरे ना मेरी हस्ती है, चौखट पे ही अब तो बस्ती है,
चरणों में ठिकाना मिल जाये, तो जीवन भर-आराम रहे ।। २ ।।

दर-दर के थपेड़े खाता रहा, मंजिल को लो मैं अब पा ही गया,
बस हाथ दया का धर दे तू, होठों पे मेरे तेरा नाम रहे ।। ३ ।।

अच्छा या बुरा हूँ, हूँ तेरा, लो आज शरण मैं आन पड़ा,
मालिक है तू मेरी साँसों का, ये 'हर्ष' तेरा गुलाम रहे ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : सावन को आने दो ...)

**जब मुँह खोलुँ तो आये, होठों पे तेरा नाम,**
**होठों पे तेरा नाम -२ ।। टेर ।।**

सोऊँ तो तू नीन्दों में, देता है श्याम दिखाई,
कानों में मेरे पड़ती, बंशी की तान सुनाई,
आँखे नचा के तू, थोड़ा इठलाता है, बरबस आ जाता है ।।
होठों पे तेरा नाम -२ ।। १ ।।

ख्वाबों में श्याम तूही है, मेरे खयालों में तू ही,
तेरे ही नाम की मस्ती, छाई रहे बस यूं ही,
होले से सांवरियाँ, तू मुस्कुराता है, उस वक्त आता है ।।
होठों पे तेरा नाम -२ ।। २ ।।

'हर्ष' शुरु हुई तुमसे, तुझपे हो खतम कहानी,
अब तेरी धुन में बीते, सेवक की ये जिन्दगानी,
हृदय के तारों को, जब छेड़ जाता है, तब आ ही जाता है ।।
होठों पे तेरा नाम -२ ।। ३ ।।

## ।। भोग का भजन ।।

(तर्ज : साँवल शा गिरधारी...)

**जीमो जी श्याम बिहारी,**
**खाटू का वासी, जीमो श्याम बिहारी,**
**चूरमें की थाली, खीर भरी प्याली,**
**मारो सबड़को ।। टेर ।।**

रोट बाजरा साग फली को,
दाल में तड़को देशी घी को,
कढ़ी गट्टावाली, खाटू का वासी,
कढ़ी गट्टावाली ।। चूरमें की थाली... ।। १ ।।

चटणी को स्वाद बड़ो ही अलबेलो,
आम की थोड़ी लूंजी ले ल्यो,
पीओ रायता प्याली, खाटू का वासी,
पीओ रायता प्याली ।। चूरमें की थाली... ।। २ ।।

मोती पाक केशरिया घेवर,
चनाचूर का तीखा तेवर,
फीणी जयपुर वाली, खाटू का वासी,
फीणी जयपुर वाली ।। चूरमें की थाली... ।। ३ ।।

काजू किशमिश दाख छुआरा,
कलकत्ता का पान सिंघाड़ा,
चूरी चूरु वाली, खाटू का वासी,
चूरी चूरु वाली ।। चूरमें की थाली... ।। ४ ।।

पड़दो लगायो चंवर ढुलाई,
थाने प्रेम सुं 'हर्ष' हिलाई,
पंखी झालर वाली, खाटू का वासी,
पंखी झालर वाली ।। चूरमें की थाली ....।। ५ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : कांछी रे कांछी रे...)

**जाना रे जाना रे खाटू जाना भैया,**
**मिल जायेगा रे - कन्हैया ।। टेर ।।**

लीले घोड़े वाले का है धाम जहाँ,
हारे का साथी है श्याम वहाँ,
हार करके जाना, जीत के तू आना,
बैठा है बंशी बजैया ।। १ ।।

मेरे बाबा जैसा ना है कोई दानी,
कलयुग में दुनिया बनी है दिवानी,
खाली हाथ जाना, भरके झोली लाना,
भर देगा धेनु चरैया ।। २ ।।

दीनो का है साथी मेरा खाटूवाला,
बिना मांगे भगतों को देने वाला,
''हर्ष'' दर पे जाना, सिर को झुकाना,
बन जायेगा वो खिवैया ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : किर्तन में भगतो आज तो रंग...)

**झूले पर, राधे श्याम को आज बिठाना है,**
**दे दे कर, झोटा आज इन्हें तो झुलाना है ।। टेर ।।**

वृंदावन से मुरली वाले किर्तन में है आये,
अपने संग में बिरज किशोरी राधेजी को लाये,
झूले का, भगतों ये शोकीन पुराना है ।। १ ।।

चाहे चांदी का झूला हो चाहे हो लकड़ी का,
उस पर श्याम विराजे जिसमें भाव भरा भगती का,
भावों से, भगतों हमको डोर हिलाना है ।। २ ।।

''हर्ष'' झुलाओ इतना भगतों मन में ना रह जाये,
रीझ के मेरा कान्हा वापस वृंदावन ना जाये,
दाता को, मिलके भगतो आज रिझाना है ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : तुम आ गये हो नूर आ गया है...)

**तुम मिल गये हो, सुकुं मिल गया है,**
**नहीं तो अंधेरों में, मैं जी रहा था,**
**चरणों में तेरे, पनाह मिल गई है,**
**अकेला युहीं, जिन्दगी जी रहा था ।। टेर ।।**

खता क्या हुई, पता ही नहीं, नहीं जानता हूँ मगर,
खबर ना मुझे, कहुँ क्या तुझे, क्या कर रहा था ऽऽऽ,
मंजिल बिना ही चला जा रहा था ।। १ ।।

यहाँ मैं रहा, अकेला सदा, ना कोई भी था हमसफर,
नहीं था कोई, जो थामें मुझे, भले तुम मिले थे ऽऽऽ,
कि दिल ये हमारा बुझा जा रहा था ।। २ ।।

भुला ना सकुं, इतना कहुं, ये अहसान उम्र भर,
तुम्हारी दया, 'हर्ष' सदा, मैं पा रहा हूँ ऽऽऽऽ,
जहाँ में युहीं ठोकरें खा रहा था ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : चाहे दूर हो चाहे पास हो मेरे जीवन...)

**तेरा साथ हो, दीनानाथ हो,**
**मेरे सिर पे सदा तेरा हाथ हो ।। टेर ।।**

मैं हूँ तुम्हारी प्रीत में पागल,
तुम हो मेरे मोहन ''मेरी मंजिल''-२ ।। १ ।।

भूल भी जाये चाहे जमाना,
मुझको मेरे प्यारे ''तू ना भुलाना''-२ ।। २ ।।

जब जब तेरा ध्यान लगाऊँ,
तुझको मेरे कान्हा, ''सन्मुख पाऊँ''- २।। ३ ।।

'हर्ष' तुम्हारा हो ही चुका है,
प्रीत में तेरी अब, ''खो ही चुका है''-२ ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मेरा हाथ पकड़ ले रे... )

**तेरा श्याम सहारा है, बंदे काहे तू घबराये,**
**पार लगेगी नैया तेरी, तूफां जितने आये रे ।। टेर ।।**

सुबह-शाम इनकी, सेवा जो करते,
मुसीबत में वो फिर, कभी भी ना डरते,
श्याम कृपा से काम तुम्हारा, कभी ना रुकने पाये रे ।। १ ।।

जिसने किया है, श्याम पे भरोसा,
नचीता बे परवाह, रहा वो हमेशा,
उसकी गाड़ी निज हाथों से, मेरा श्याम चलाये रे ।। २ ।।

देखले तू इनको, दिल में बिठाकर,
आँधियों से चाहे, टकराना जाकर,
''हर्ष'' कोई भी बाल तुम्हारा, बाकां ना कर पाये रे ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(धमाल)

**तंगी मेट द्यो सांवरिया करद्यो रुपियाँ की बरसात,**
**श्याम खजानो मैं भी बाबा, लूटूं दोनुं हाथ ।। टेर ।।**

जी मैं आवे हर ग्यारस पर, मैं भी खाटू आऊँ जी,
खाली जेब दिखावे मन्ने, मेरी के औकात ।। १ ।।

चाव घणो है मैं भी थारो, मंदरियो सजवाऊँ जी,
बिना दाम के कोन्या बाबा, मेरे बस की बात ।। २ ।।

मेरो भी जी चावे थाँपे, हीरा मोती वारुँ जी,
मन तो भोत बड़ो थे दीन्यो, पर खाली है हाथ ।। ३ ।।

समरथ करद्यो मैं भी थाने, छप्पन भोग जिमाऊँ जी,
'हर्ष' भगत की इतणी अरजी, सुणियो दीना नाथ ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : दिल के टुकड़े-टुकड़े करके...)

**दिल का कोना रोशन करके, सांवरे क्युं चल दिये,**
**जादूगारे इतना बतादे, बिन तेरे हम कैसे जियें ।। टेर ।।**

कहाँ छुपे हो, ये तो बताओ,
ऐसे हमारा, जी ना जलाओ,
वरना कन्हैया रोने लगेगें,
तेरा चले ना, कोई बहाना,
श्याम सलोनी, सूरत दिखाना,
गम ये दिवाने कैसे सहेगें,
ओ निर्मोही, नैनों में प्यारा,
सपना संजोकर चल दिये ।। १ ।।

घाव लगाके, श्याम जिगर पे,
ओझल हो गये, आज नजर से,
आँखों का सावन कैसे थमेगा,
याद तुम्हारी, जब आयेगी,

हमको कितना, तड़पायेगी,
ये तो बता दिल कैसे लगेगा,
अरमानों के, दिल में प्यारे,
दीप जला कर चल दिये ।। २ ।।

प्रेम का तूने, पाठ पढ़ाया,
हमसे अपना, आप भुलाया,
आज भला तू छुप ना सकेगा,
गर आना हो, जल्दी आना,
प्रेम अगन में, ये परवाना,
तेरे विरह में जल के रहेगा,
'हर्ष' भला क्युं, प्रीत की मोहन,
रीत सिखा कर चल दिये ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(राज रचयिता : रजनीश शर्मा )

**दिया श्याम ने सहारा, मुझे दुखों से उबारा,**
**मेरा चमका सितारा, हुई बल्ले-बल्ले ।। टेर ।।**

जब जब गम के बादल छाये, श्याम प्रभु ने ''कष्ट मिटाये'' -२,
साथ में मेरे हरदम रहता, आफत पास कभी ना आये,
इसे जब भी पुकारा, आया बनके हमारा,
मिला मुझको किनारा, हुई बल्ले-बल्ले ।। १ ।।

शरणागत की लाज बचाना, हारे हुए को ''गले लगाना''-२,
निर्धन को धनवान बनाना, भगतो इसका शौक पुराना,
इसे पूजे जग सारा, ये हैं देव बड़ा न्यारा,
बहे करुणा की धारा, हुई बल्ले-बल्ले ।। २ ।।

इस कलयुग में कौन है ऐसा, जिसने इनका ''दर ना देखा''-२,
भाव जिया में जिसके जैसा, 'हर्ष' यहाँ वो पाता वैसा,
इसे गम ना गंवारा, जाके देखो जी नजारा,
चले सब का गुजारा, हुई बल्ले-बल्ले ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : लगन तुमसे लगा बैठे...)

**दिखादे सांवली सूरत ये परदा क्युं लगाया है,**
**हसीनाओं के जैसे क्युँ, बता घूंघट गिराया है ।। टेर ।।**

गजब के हो हंसी कान्हा, मगर पूछे है दिवाना -२,
शरम किस बात की प्यारे, ये मुखड़ा क्युँ छुपाया है ।। १ ।।

अगन पहले लगाते हो, लगाकर छुप क्युँ जाते हो -२,
अगर छुपना ही था मोहन, मुझे फिर क्युँ बुलाया है ।। २ ।।

तेरे दीदार का प्यासा, लिये दर्शन की अभिलाषा -२,
हजारों मील चल करके, दिवाना दर पे आया है ।। ३ ।।

हटादे अब जरा परदा, करुँ चरणों में मैं सजदा -२,
''हर्ष'' दिल में संजो करके, बड़े अरमान लाया है ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : तुमको पिया, दिल दिया, कितने नाज से...)

**दुखड़े मेरे, हर लिये, तुमने साँवरे हो ऽऽऽऽ**
**किस्मत खुल गई खाटू वाले, तेरे दरबार में हो ऽऽऽऽ ।।**

पकड़ी कलाई मोहे, अपना लिया,
कितना दयालु तू है, दिखला दिया,
गर्दिश के दिन दूर हुए हैं, तेरे चमत्कार से हो ऽऽऽऽ ।। १ ।।

मोपे दयालु तेरी, किरपा हुई,
तेरी दया की बाबा, बरखा हुई,
दुनिया में सम्मान मिला है, तेरे उपकार से हो ऽऽऽऽ ।। २ ।।

तुम जो मिले तो सारी, खुशियाँ मिली,
''हर्ष'' मुझे इक न्यारी, दुनिया मिली,
मुझको बाबा सब कुछ मिल गया, तेरे दीदार से हो ऽऽऽ ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : वो कागज की कश्ति वो बारिश का पानी...)

**न दौलत की चाहत न शोहरत का भूखा,**
**भले भूल जाये मुझे जग ये सारा,**
**अगर अपने रुठे कोई गम नहीं है,**
**''है संतोष इतना कि तू है हमारा-२'' ।। टेर ।।**

मुझे जिन्दगी ने है सब कुछ दिखाया,
नहीं कोई अपना ये जग है पराया,
यहाँ मैंने जिसपे किया है भरोसा,
उसी से ही जीवन में खाया है धोखा,
न भावों का मतलब न रिश्तों के माने-२,
''है स्वारथ का साथी ये संसार सारा -२'' ।। १ ।।

फरेबों की दुनिया यहाँ झूठे वादे,
जो रोकर के सुनते वो हँस कर उड़ाते,
अगर माँग बैठो नहीं कोई देगा,
जमाने से तेरी वो बातें कहेगा,

मगर मेरा हमराज तू है कन्हैया-२,
''मुसीबत में हरदम ही तुझको पुकारा - २'' ।। २ ।।

रहे साथ तेरा यही है तमन्ना,
तुम्हारे सिवा अब किसी का न बनना,
तुम्हारी रजा में हमेशा हूँ राजी,
तुम्ही पे लगा दी ये जीवन की बाजी,
रहूँगा मैं वैसे तू रखेगा जैसे-२
''कहे ''हर्ष'' पक्का है बंधन हमारा -२'' ।। ३ ।।



**उनके वादों की सुनिये जरा दास्तां,**
**हम तुम्हारे हैं हरदम वो कहते रहे,**
**पाठ हमको वफा का पढ़ाते थे जो,**
**बेवफा हो गये देखते-देखते ।।**

(तर्ज : आधा है चन्द्रमा रात आधी...)

**पूरण है चन्द्रमा आज देखो,**
**आई पूनम की ये रात देखो, देखो आज देखो ।। टेर ।।**

आज चन्दा ने चान्दनी बिखेरी,
कहीं खोई हैं रातें अंधेरी,
शीतल शीतल पवन, झूमें धरती गगन,
आज नाचे है सारी कायनात देखो ।। १ ।।

रात पूनम शरद की है आई,
खीर घर घर में आज बनवाई,
खुले अम्बर तले, ज्यामें अमृत घुले,
आज कुदरत की कैसी करामात देखो ।। २ ।।

आज खिल खिल के चन्दा हँसे है,
कान्हा मधुबन में रास रचे है,
'हर्ष' पावन बड़ी, ये मिलन की घड़ी,
आज राधा-रमण की मुलाकात देखो ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मेला दिलों का आता है...)

**फागुन का मेला आता है हर साल,**
**आके चला जाता है,**
**खाटू के नजारे, लगते बड़े प्यारे,**
**सजके वहाँ बैठे, हारे के सहारे ।। टेर ।।**

ढोलक, बाजे, और बाज रहे हैं चंग,
सेवक, नाचे, सब इक दूजे के संग,
जग वाले देते हैं मेले की मिसालें,
आँखों में घूमती है खाटू की धमालें,
मेला धमालों का आता है हर साल ...।। १ ।।

तू भी, चल रे, मौका ना मिलेगा कल,
रस्ता, देखे, खाटू वाला हर पल,
एक बार चल कर देखले नजारे,
भूल नहीं पायेगा खाटू की बहारें,
मेला बहारों का आता है हर साल ...।। २ ।।

लीलें, वाले, की लीला चलके देख,
पल में, बदले, तेरी किस्मत का लेख,
दोनों हाथों बैठा है सांवरा लुटाने,
लूटले तू जाकर श्याम के खजाने,
मेला खजानों का आता है हर साल ...।। ३ ।।

बारस, आती, आँखे ये बहे कल कल,
बच्चे, बिछड़े, जब बाबा से उस पल,
करते हैं 'हर्ष' सारे आने के फिर वादे,
दिल में संजोके लाते मेले की वो यादें,
मेला यादों का आता है हर साल...।। ४ ।।

**तेरी धूली लगी जबसे माथे पे हम,
क्या से क्या हो गये देखते-देखते,
तेरे जलवों ने श्याम ऐसा जादू किया,
हम फिदा हो गये देखते-देखते ।।**

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : ग्यारस चानण की आई...)

**बरसां सुं यो दिन आयो, हिवड़े में हेत समायो,**
**ठाकुर पधार्‌या म्हारे आंगणा ।। टेर ।।**

मोर मुकुट में थारे, ''सोवे किलंगी जी''-२,
घेर घुमेरो बागो, ''आभा सतरंगी जी''-२,
सेवकिया चंवर ढुलावे, सगला मिल महिमा गावे,
साज सुरीला बाजे बाजणा ।। १ ।।

थारे गले में सोवे, ''हार हजारी जी''-२,
फूलां का गजरा जांकी, ''शोभा है भारी जी''-२,
इत्तर की बरखा होवे, झांकी सैं को मन मोवे,
नर-नारी आया म्हारे बारणा ।। २ ।।

ऊँचे आसण पर बाबा, ''श्याम बिराजे जी''-२,
कानां में सोणा सोणा, ''कुण्डलिया साजे जी''-२,
भगतां सू प्रीत निभाई, अरजी की करी सुणाई,
'हर्ष' पधार्‌या म्हारे पावणा ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : बहुत प्यार करते हैं ...)

**बड़ी आस लेके आई, सुन के तेरा नाम,**
**सूनी है गोद मेरी, भरदे रे श्याम ।। टेर ।।**

सूना है आँगन मेरा, सूना है पलना,
इसमें झुलादे बाबा, प्यारा सा ललना,
करके मैं हारी अब तो, कोशिशें तमाम ।। १ ।।

शरण पड़े की पूरी, करता तू कामना,
दुखिया गरीब की भी, सुनले तू प्रार्थना,
अपनी दया का मुझको, दे दे ईनाम ।। २ ।।

ताने ना सहने पाऊँ, आये मोहे लाज रे,
अपने पराये सारे, बोले मोहे बाँझ रे,
जीना हुआ है मेरा, बिल्कुल हराम ।। ३ ।।

''हर्ष'' तू करदे मेरी, कामना की सिद्धि,
चहुं ओर होगी तेरी, जग में प्रसिद्धि,
दरदी को मिलता तेरे, दर पे आराम ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(फूल तुम्हें भेजा है खत में ...)

**भूल गये क्युं इस निर्बल को, भूल हुई बोलो कैसी,**
**ये तो सच है, कर ना सका मैं, प्रीत सुदामा के जैसी ।। टेर ।।**

भेंट तुम्हें अब क्या दूं बाबा, तन्दुल की सौगात नहीं,
प्यार भरा दिल लाया हूँ मैं, मेरी तो औकात यही,
भाव भरे दिल का नजराना, ''सांवरिये स्वीकार करो'' -२,
हाथ पकड़लो तारण हारे, भव बंधन से पार करो ।। १ ।।

मैं प्राणी हूँ इस कलयुग का, भूल चूक का पुतला हूँ,
सन्मार्ग पर चलते-चलते, रह रह कर मैं फिसला हूँ,
माफ करो मेरी भूलों को, ''तुम तो दया के सागर हो-२''
प्यासा हूँ मैं प्रीत का तेरी, प्रेम भरी तुम गागर हो ।। २ ।।

शरणागत हूँ श्याम तुम्हारा, शरण पड़े का मान करो,
ज्ञान की ज्योत जला कर मेरे, अन्दर का अज्ञान हरो,
गलती तो मैं करता रहूँगा, ''तुम भूलों पर मत जाना-२''
भूल से भी ऐ खाटूवाले, 'हर्ष' मुझे ना बिसराना ।। ३ ।।

(पीपली)

**मकराणे को बाबा थारो, देवरो जी,**
**सिंहासन पर बैठ्यो म्हारो लखदातार ।। टेर ।।**

मोर मुकुट सिर सोवे थारे, सोवणो जी,
कानां माही कुण्डलिया है लीले का सवार ।। १ ।।

गल मोतियन की माला मन, मोहणी जी,
बाजुबन्ध में हीरो चमके पालणहार ।। २ ।।

काजल सोवे बाबा थारी, आँख में जी,
लटके थारे सिर पर छत्तर हजार।। ३ ।।

'हर्ष' बिराजे हाथां थारे, मोरछड़ी जी,
झाड़ो देवो टाबरियां ने बारम्बार ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : सुनी मालिकां मेरी कूक पपीहे वाली...)

**महसूस कर, मेरा दर्द ओ साँवरे,**
**कोई ना यहाँ, हम दर्द ओ साँवरे ।। टेर ।।**

तेरे द्वारे आ गया हूँ, रख या बिसार दे,
डूबने दे चाहे कश्ति, या फिर उबार दे,
कहुँ मैं किसे, मेरा दर्द ओ साँवरे ।। १ ।।

तेरे होते दास तेरा, दुखड़े क्युं पा रहा,
अपने बेगानों की वो, ठोकरें क्युं खा रहा,
बांट ले जरा, मेरा दर्द ओ साँवरे ।। २ ।।

तारे होगें लाखों तुमने, कैसे विश्वास हो,
''हर्ष'' मैं मानुंगा जब, पूरी मेरी आस हो,
मेट तो सही, मेरा दर्द ओ साँवरे ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(धमाल)

**महिनो फागण को खाटू में रस बरसे रे,**
**खाटू हालो श्याम धणी भगतां ने निरखे रे ।। टेर ।।**

टाबर टीकर बडा बडेरा श्याम निशान ले चाले जी,
आतो देख भगत ने म्हारो बाबो हरखे रे ।। १ ।।

पेट पलणिया पीठ के बल कोई पसर पसर के आवे जी,
पीड़ भगत की देख श्याम का आँसु ढ़लके रे ।। २ ।।

भांत भांत की मंशा लेकर सगला खाटू आया जी,
कुणसे भगत ने के चाये यो बैठयो परखे रे ।। ३ ।।

बारस पाछे ''हर्ष'' श्याम सुं बिदा भगत जद होवे जी,
गले लागकर इक दूजे के सगला बिलखे रे ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : म्हारी हथेल्यां रे बीच ...)

**माची फागण की रमझोल, ''झाला देवे म्हारो कान्हुड़ो'' -२,**
**थे, बेगा खाटू चालो जी ।। टेर ।।**

ढफली बजाल्यो सागे ठुमका लगाल्यो, ''कोई नाचणिये के'' -२,
सागे सागे ''नाचे म्हारो कान्हुड़ो''-२,
थे, बेगा खाटू चालो जी ।। १ ।।

श्याम को निशान थारे हाथां में उठाल्यो, ''कोई चालणिये के'' -२,
सागे सागे ''चाले म्हारो कान्हुड़ो''-२
थे, बेगा खाटू चालो जी ।। २ ।।

आप भी चालो सारे घर का ने ले चालो, ''कोई जावणिये की''-२,
झोली भगतो ''भरसी म्हारो कान्हुड़ो''-२
थे, बेगा खाटू चालो जी ।। ३ ।।

बाबा जी सूं 'हर्ष' होली खेलण तांई चालो, ''कोई खेलणिया के''-२,
सागे होली ''खेले म्हारो कान्हुड़ो''-२
थे, बेगा खाटू चालो जी ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मुझे नीन्द न आये...)

**मेरा चैन चुराये, मुझे नीन्द न आये,**
**मोहे सारी-सारी रात जगाये,**
**कन्हैया मेरा दिल ले गया ।। टेर ।।**

भोली भाली चित्तवन में खो जाऊँ मैं, यादों में फिर अपना आप भुलाऊँ मैं,
टेढ़ी मेढ़ी इसकी चाल है, काले घुँघराले बाल हैं-२,
मेरे होश उड़ाये, कोई दर्द जगाये, कोई इसको जा समझाये,
कन्हैया मेरा दिल ले गया ।। १ ।।

तीखी-तीखी तेरी नैन कटारी है, मेरा तन-मन अबतो तुझपे वारी है,
ऐसे मुझे तेरा युं ताकना, प्रेम जाल में फांसना-२,
क्युं तीर चलाये, क्युं घाव लगाये, क्युं सोये अरमान जगाये,
कन्हैया मेरा दिल ले गया ।। २ ।।

तीर जिगर पे तूने ऐसा मारा है, सच पूछे तो घायल ''हर्ष'' तुम्हारा है,
दिल मेरा देखो यहाँ खो गया, मैं तो तेरा अब हो गया-२,
मोहे समझ न आये, मुझे क्या हुआ हाय, कोई मुझको जरा बतलाये,
कन्हैया मेरा दिल ले गया ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : तेरे प्यार का आसरा ...)

**मेहरबां हुआ क्युं, बता श्याम इतना,**
**मैं तेरी दया के, लायक नहीं हूँ,**
**कर्जदार हूँ मैं, तुम्हारा दयालु,**
**मैं कर्जा चुकाने के, लायक नहीं हूँ ।। टेर ।।**

तू कितना भी दे दे, अरे देने वाले,
खड़े ही मिलेगें, सदा लेने वाले,
जो पहले ही तूने, भरा मेरा दामन,
उसी को उठाने के, लायक नहीं हूँ ।। १ ।।

तुम्ही से ही पाया, तुम्ही को भुलाया,
मैं माँगने दुबारा, तेरे पास आया,
हुँ खुदगर्ज इतना, मेरे साँवरे मैं,
तुम्हें मुँह दिखाने के, लायक नहीं हूँ ।। २ ।।

तुझे सब पता है, तुझे सब खबर है,
मेरे हर करम पे, तुम्हारी नजर है,
ऐ 'हर्ष' माफ करना, मुझे खाटू वाले,
तेरे दर पे आने के, लायक नहीं हूँ ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मैं ना भूलूंगा...)

**मैं ना भूलुंगा, मैं ना भूलुंगा,**
**श्याम तुम्हारे अहसानों को मैं ना भूलुंगा ।। टेर ।।**

मैं दिन वो याद करुँ-२, तो मन ही मन मैं डरुं ऽऽऽ,
गुजारा कैसे चले -२, ये सोचुं आहें भरुं ऽऽऽ,
अपने भजनों की सेवा में मुझे लगाया है,
जीने की ये राह दिखाना मैं ना भूलुंगा ।। १ ।।

मेरे अपने रुठे -२, सहारे सब छूटे ऽऽऽ,
खून के रिश्ते भी-२, ना जाने कब टूटे ऽऽऽ,
बनके सहारा खाटू वाले पल में तू आया,
श्याम तुम्हारी दातारी को मैं ना भुलुंगा ।। २ ।।

भंवर में थी नैया-२, नहीं कोई माझी था ऽऽऽ,
थाम ले जो बैंया-२, नहीं कोई साथी था ऽऽऽ,
'हर्ष' भगत का हाथ पकड़ के साथ निभाया है,
प्रेम की ये सौगात सांवरे मैं ना भूलुंगा ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(राज रचयिता : रजनीश शर्मा)

**लीले की है सवारी, आये हैं लीलाधारी,**
**बैठे है देखो बन ठनके कि आज मैनु नच लैण दे,**
**माथे पे तेज निराला, आया है खाटूवाला,**
**मेहमां हमारा बन करके कि आज मैनु नच लैण दे।। टेर ।।**

खाटू वाले की आओ नजर उतारें जी-२,
प्रेम से बाबा जी के चरण पखारें जी -२,
चन्दा से मुखड़े की लेऊँ मैं बलाई जी,
मूरत ये प्यारी मेरी आँखों में समाई जी,
सोणी सी प्यारी प्यारी, झांकी ये न्यारी-न्यारी,
देखो जिया ना मेरे बस में कि,
आज मैनु नच लैण दे ।। १ ।।

मोर मुकुट सोहे कानों में बाली-२,
मन को लुभाये देखो होठों की लाली -२,
फूलों का गजरा तुम्हें किसने पहनाया,

सोणा सिणगार बोलो किसने सजाया,
पहने पचरंगी बागा, ऊँचे आसन पे बाबा,
बैठा है देखो सज धज के कि,
आज मैनु नच लैण दे ।। २ ।।

'हर्ष' नजारा बड़ा दिलकश सुहाना-२,
हर कोई चाहे आज नचना नचाना -२,
शंख नगाड़े बाजे, बाजे शहनाई,
ठुमके लगायें जमके लोग लुगाई,
झुमो जी मौज मनाओ, मेरे संग भंगड़ा पाओ,
मैं भी लगालुं थोड़े ठुमके कि,
आज मैनु नच लैण दे ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : अपनी अपनी बीबी पे सबको गुरुर है...)

**लीले घोड़े वाले का सच्चा दरबार है,**
**दीनों का दयालु सदा ही मददगार है ।। टेर ।।**

खाटू के इस राजा की दुनिया पे हुकुमत,
ड्योढ़ी उपर झुकता ये सारा संसार है ।। १ ।।

कोई गम का मारा पुकारे मेरे श्याम को,
उसके दुखड़े हरने को रहता तैयार है ।। २ ।।

जो भी आके झोली पसारे दरबार में,
मेरा दानी भरता उसी के भण्डार है ।। ३ ।।

ठोकर खाके जो भी शरण इसकी आ गया,
शरणागत का 'हर्ष' लगाता बेड़ा पार है ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : किस्मत वालों को ...)

**लिखने वाले तू लिखदे किस्मत में तेरा प्यार,**
**मुझको मिल जाये बाबा तेरा दीदार ।। टेर ।।**

जिसके सिर पे हाथ तुम्हारा है,
रोशन उसका आज सितारा है,
किस्मत तेरे हाथ में मेरी है,
लिख डालो तकदीर क्या देरी है,
तेरी किरपा का दाता मैं हुँ हकदार ।। १ ।।

मुझको अपनी पतंग बना लो ना,
जैसे चाहे डोर हिला लो ना,
थामे रखना ये उड़ जायेगी,
छोड़ ना देना ये कट जायेगी,
मैंने सोंपी है तुझको डोरी सरकार ।। २ ।।

प्यार तेरा जो मुझको मिल जाये,
बाल कोई ना बांका कर पाये,
'हर्ष' कहे उपहार मुझे दे दो,
बेटे को अब प्यार जरा दे दो,
मुझको है खाटू वाले तेरी दरकार ।।३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : ऐ हवा मेरे संग-संग चल...)

**श्याम तुमसे ये कहना है, तेरे चरणों में रहना है,**
**चाहे सुख दे या दुख दे तू, हमें हंस हंस सहना है ।। टेर ।।**

दूर मैं तुमसे रह नहीं पाऊँ, साथ तुम्हारा हर पल चाहुँ,
महर जरा इतनी सी करना, द्वार तिहारे हरदम आऊँ ।।
श्याम तुमसे ये कहना है...।। १ ।।

आँख से मेरी ना हो ओझल, सामने मेरे रहना हर पल,
जीवन भर देखुं मैं नजारा, ऐसा पावन ऐसा निर्मल ।।
श्याम तुमसे ये कहना है...।। २ ।।

''हर्ष'' तुम्हारा हो ही चुका है, होश वो अपने खो ही चुका है,
और मुझे अब तू ना रुलाना, यादों में इतना रो ही चुका है ।।
श्याम तुमसे ये कहना है...।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : आप जिनके करीब होते हैं...)

**श्याम जिनके करीब होते हैं,**
**वो बड़े ख़ुशनसीब होते हैं ।। टेर ।।**

जब मुसीबत कभी भी आती है,
उनकी चौखट से लौट जाती है-२,
उनके अच्छे नसीब होते है ।। १ ।।

दर पे आने की भी ना मोहलत हो,
चाहे कितनी ही पास दौलत हो-२,
वो तो दिल के गरीब होते है ।। २ ।।

आँख दुखियों की पोछनां जाने,
नेकी करके जो भूलना जाने-२,
'हर्ष' वो भी अजीब होते है ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : सोलह बरस की...)

**शीश का दान दे, रख लिया कृष्ण का मान,**
**ऐ श्याम तेरी दरियादिली को सलाम ।। टेर ।।**

याचक बने थे ठाकुर, ब्राह्मण के वेश में,
फैला के हाथ अपने, घुटनों पे बैठकर,
दानी बना तू बाबा, बालक के रूप में,
शीश का दान दिया, माँ आज्ञा मानकर,
फूलों की बरखा हुई, अम्बर से सांवरे....
श्रीकृष्ण ने लिखा झट, कलयुग तुम्हारे नाम ।। १ ।।

चरणों में जिनके झुकता, सारा जहान है,
खुद वो झुके थे लेने, शीश को दान में,
क्या-क्या बताऊँ क्या-क्या, ठाकुर ने कह दिया,
बलियों में भूप दानी, बालक की शान में,
शत् शत् नमन है तेरे, चरणों में सांवरे....

धन धन अहिलवति माँ, धन धन तुम्हारा श्याम ।। २ ।।

दुनिया में आज तेरी, घर-घर में गूँज है,
भगतों का पालनहारा, बनके तू आ गया,
जादू तुम्हारा 'हर्ष', सर चढ़ के बोलता,
तेरा सुरुर सारी, दुनियां पे छा गया,
नित नये लोग दर पे, आते है सांवरे....
तेरी दया से उनके, बनते हैं सारे काम ।। ३ ।।

**हमने देखें हैं अपनों के ऐसे करम,**
**अपना कहने में उनको आती शरम,**
**जिनको उंगली पकड़ कर चलाया कभी,**
**वो खुदा हो गये देखते-देखते ।।**

## ।। नव गृह प्रवेश ।।

(तर्ज : आसरा एक तेरा...)

**श्याम तेरी दया से, आज उपहार मिला है,**
**तेरा मंदिर है जिसमें, ऐसा घर द्वार मिला है ।। टेर ।।**

एक अरमान था बस, हो मेरा आशियाना,
साथ मेरे रहो तुम, ऐसा इक घर बनाना,
आस पूरी हुई है, प्यारा संसार मिला है ।। १ ।।

रिद्धि-सिद्धि के संग में, पहले गणराज आये,
राम सीता को संग में, वीर हनुमान लाये,
मैं हुँ बड़भागी मुझको, ऐसा परिवार मिला है ।। २ ।।

जब भी मैं बाहर निकलु, श्याम देखुं मैं तुझको,
घर में आते ही बाबा, तेरा दर्शन हो मुझको,
'हर्ष' को घर के रूप में, तुम्हारा प्यार मिला है ।। ३ ।।

## ।। नव आवास के उपलक्ष में ।।

(तर्ज : जिस नैया के...)

**श्याम तुम्हारी किरपा से ही बना नया आवास,**
**दया दिखलाते रहना - प्यार बरसाते रहना ।। टेर ।।**

तेरी दया से बाबा, बना आशियाना,
मेरे कुटुम्ब का इसमें, रहे आना जाना,
आने वाले मेहमानों का, रखुं ध्यान मैं खास ।। १ ।।

स्वस्थ सुखी हो बाबा, इस घर में सारे,
आगे ही बढ़ते जायें, तेरे सहारे,
घर के हर प्राणी का तुझमें, हो पूरा विश्वास ।। २ ।।

अन्न धन से भर के रखना, मेरे भण्डारे,
खुश होके जाये वो ही, आये जो द्वारे,
'हर्ष' कहे चौखट से कोई, जाये नहीं निराश ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : तावड़ा मन्दो पड़ज्या रे...)

**श्याम थारी शरणां में लीज्यो,**
**माया फन्द छुड़ाय वास थारे चरणां में दीज्यो ।। टेर ।।**

भोर भये नित रोज बुहारूं, आंगणियो थारो, श्याम जी,
मंगला का नित दर्शन पाऊँ, किरपा कर दीज्यो ।।
श्याम थारी ...।।१।।

श्याम बगीची सूं चुन-चुन कर, फुलड़ा ले आऊँ, श्याम जी,
गजरो थे स्वीकार सांवरा, म्हारो कर लीज्यो ।।
श्याम थारी ...।।२।।

सवा सेर को बणा चूरमो, नितकी मैं ल्याऊं, श्यामजी,
रुच रुच भोग लगाय मान थे, म्हारो रख लीज्यो ।।
श्याम थारी ...।।३।।

पाँच आरती जद जद होवे मन्दरिये के माय, श्याम जी,
'हर्ष' भगत थाने चँवर डुलावै, इतणो कर दीज्यो ।।
श्याम थारी ...।।४।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : धरती पर है आसमां ...)

**सज कर बैठा साँवरा,**
**मोर मुकुट सिर सोहना, आँखों में जादू भरा,**
**साँवरा तुमसा यहाँ, देखा ना कोई दूसरा ।। टेर ।।**

पेचा है पचरंगी तेरा, बागा सोहे घेर घुमेरा -२,
तेरी अदाओं ने घायल किया रे,
बन कर डोलूँ बावरा ।।१ ।।

होले से तेरा मुस्काना, मोर छड़ी से कष्ट मिटाना -२,
घर घर तेरा डंका बजे रे,
जग में देखो तो जरा ।।२ ।।

सजना तेरा शौक है प्यारे, दिल को भाये मस्त नजारे -२,
'हर्ष' दिवाने पे ओ जादूगारे,
जादू चल गया है तेरा ।।३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : तुम हमारे थे प्रभु जी तुम हमारे हो...)

**सांवरे मेरी कलाई, थाम ले इकबर,**
**गिर पड़ुं ना मैं अकेला, ओ मेरे दिलबर ।। टेर ।।**

जग जंजाल में भटक रहा हूँ, सूझे नाही किनारा,
इस निर्बल का पालन हारे, आजा बनके सहारा,
मेरे भी हमदम बन जाओ, ओ मेरे प्रभुवर ।। १ ।।

मोह माया के फंद छुड़ाके, अपनी प्रीत जगा दे,
तुझमें खोकर रह जाऊँ मैं, अपना आप भुलाके,
अपने प्रेम की ज्योत जगा दो, ओ मेरे प्रभुवर ।। २ ।।

जब भी तेरा ध्यान धरूँ तो, माया मन भरमाये,
तेरे मेरे बीच की कड़ियां, टूट के ही रह जाये,
'हर्ष' मुझे अब आन सम्भालो, ओ मेरे प्रभुवर ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : सुन सांवरे तेरे ही भरोसे मेरी नाव रे...)

**सुन सांवरे, हारे का सहारा तेरा नाम रे,**
**हार गया हूँ बाबा, अब तो आके थाम रे,**
**हार गया मैं श्याम, हाथ मेरा तू थाम ।। टेर ।।**

दरदी के तूने बाबा, दर्द मिटाये,
दुखड़े गिनाऊँ कितने, जाये ना गिनाये,
मैंने सुना है दर पे, बनते बिगड़े काम रे ।। १ ।।

काहे करे तू ऐसे, आँख मिचौली,
हालत पे दुनिया वाले, करते हैं ठिठोली,
लेलो शरण में अपनी, आया तेरे धाम रे ।। २ ।।

रोता जो आया उसको, पल में हसाँया,
''हर्ष'' दिवाने को क्युं, तूने बिसराया,
तेरी दया से होगा - अब तो आराम रे ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : परदेशिया तूने ये क्या किया...)

**सुन सांवरा, ये है तेरी दया,**
**इक रोते को तूने, हँसना सिखला दिया ।। टेर ।।**

मौजों में रहता हूँ, लोगों से कहता हूँ,
क्या-क्या किया तूने क्या - क्या बताऊँ ऽऽऽऽ
तेरा सहारा है, तू ही हमारा है,
महिमा तेरी मैं हर पल गाऊँ ऽऽऽऽ, गिरने लगा - २,
तेरा जादू चला, तूने बाहें पकड़के,
चलना सिखला दिया ।। १ ।।

रो रो कर जीता था, आँसु मैं पीता था,
रोते के तुमने आँसु क्युँ पोछें ऽऽऽऽ,
अपना क्या नाता है, क्युं तू निभाता है,
रह रह दिवाना दिल में सोचे ऽऽऽऽ, भूला तुझे-२,
तूने झट से मुझे, मेरी मंजिल का बाबा,
रस्ता दिखला दिया ।। २ ।।

मंजिल पे आया हूँ, तुझको मैं पाया हूँ,
चरणों में अपने मुझको बिठाले ऽऽऽऽ,
किस्मत का मारा हूँ, ''हर्ष'' तुम्हारा हूँ,
अपनी पनाह में मुझको ले ले ऽऽऽऽ, अहसां तेरा - २,
ये है अहसां तेरा, इक भटके हुए को,
तूने अपना लिया ।। ३ ।।

**गैर की बात करने से क्या फायदा,**
**अब तो अपनों पे हमको भरोसा नही,**
**अपना साया समझते थे ज़िनको सदा,**
**वो जुदा हो गये देखते-देखते ।।**

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मांगने की आदत जाती नहीं...)

**सुबह सवेरे, देखा इक सपना,**
**श्याम पधारे, मेरे अंगना,**
**बृज की दुलारी राधा, संग में खड़ी है,**
**अधर मुरलिया हाथों, मोर छड़ी है ।। टेर।।**

देखके चितवन जादूगारी सुधबुध सारी भूल गया,
युगल छवि के दर्शन करके मन ही मन मैं फूल गया,
धन्य हुआ है जीवन ये वो घड़ी है ।। १ ।।

श्याम रंग तन पे पिताम्बर मंजर बड़ा लुभाना था,
गोरवरण श्री राधेरानी का स्वरूप सुहाना था,
युगल छवि की मोपे किरपा बड़ी है ।। २ ।।

अश्रुधारा से जब मैंने श्री चरणों को धुलवाया,
सांवरिये ने बड़े प्रेम से मस्तक मेरा सहलाया,
महर की निगाहें इनकी मुझपे पड़ी है ।। ३ ।।

चाहे सपने में ही आओ श्याम युंही आते रहना,
'हर्ष' दिवाने की आँखों को दर्शन दिखलाते रहना,
आँखों में प्यारे तेरी खुमारी चढ़ी है ।। ४ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : मेरे दुख के दिनों में वो...)

**हर बार मैं खुद को, लाचार पाता हूँ,**
**तेरे होते क्युं बाबा, मैं हार जाता हूँ ।। टेर ।।**

हर कदम पे क्या यूंही, मैं ठोकर खाऊँगा,
बस इतना कह दे क्या, मैं जीत न पाऊँगा,
तेरी चौखट पे मैं क्या, बेकार आता हूँ ।। १ ।।

क्युं अपने वादे को, तू भूला बिसरा है,
हारा हुआ ये प्राणी, चरणों में पसरा है,
तेरा वादा याद दिलाने, तेरे द्वार आता हूँ ।। २ ।।

मेरे साथ खड़ा हो जा, बस इतना ही चाहूँ,
जीवन की बाजी फिर, मैं हार नहीं पाऊँ,
अरमां ये 'हर्ष' लिये, दरबार आता हूँ ।। ३ ।।

## ।। श्री श्याम वन्दना ।।

(तर्ज : ये जमीं गा रही है...)

**हर घड़ी श्याम तेरी, मैं दया पा रहा हूँ,**
**नाथ मेरे मैं तेरा, दिया खा रहा हूँ ।। टेर ।।**

आज तेरा दिवाना, जब जहाँ जा रहा है,
श्याम तेरा तराना, हर कोई गा रहा है,
तेरी महिमा को बाबा, आज मैं गा रहा हूँ ।। १ ।।

भाव भगतों के सुनके, खुश हुए जा रहे हो,
देख श्रद्धा को बाबा, तुम रिझे जा रहे हो,
तेरी रहमत दयालु, मैं सदा पा रहा हूँ ।। २ ।।

आज जिसको भी देखो, खाटू वो जा रहा है,
तेरी चौखट पे दानी, वो झुका जा रहा है,
तेरी किरपा को पाने, 'हर्ष' मैं आ रहा हूँ ।। ३ ।।